Dr.Ashish Kumar Kundu
Deptt. Of Philosophy
K.L.S College,
Nawada
Date-17/04/2020
B.A-III
“Manavada.”

मानावाद (Manaism) आदिम धर्म (Primitive religion) की शाखा है जिसमें माना नामक शक्ति को आराधना का विषय माना जाता है। माना को व्यक्तित्वरहित (Impersonal), अद्भुत (Mysterious) तथा विलक्षण (Extraordinary) माना जाता है।

कोडरिंगटन (Codrington) ने माना को परिभाषित किया कि "यह भौतिक (शारीरिक) शक्ति या प्रभाव नहीं है—बल्कि यह एक प्रकार की अति प्राकृतिक शक्ति है; किन्तु इसकी अभिव्यक्ति किसी भौतिक शक्ति या मानवीय शक्ति अथवा उत्कर्ष में होती है। आगे चलकर उन्होंने कहा है कि "यह भौतिक शक्ति से नितान्त भिन्न एक ऐसी शक्ति है जो सभी प्रकार के शुभ-अशुभ व्यापारों में सक्रिय रहती है; और जिस पर अधिकार या नियन्त्रण होने से सर्वाधिक लाभ होता है।"[१]

माना की उपर्युक्त परिभाषा से तीन विशेषताएँ निकलती हैं जो ध्यातव्य है' :—

(१) माना जिस शक्ति या उत्कर्ष का स्थानापन्न है, वह एक तरह से अतिप्राकृतिक शक्ति है क्योंकि यह मनुष्य की सामान्य शक्ति और प्रकृति की साधारण प्रक्रिया के परे की वस्तुओं को प्रभावित करता है।

(२) यदि यह स्वयं अपने में कोई एक निर्वैयक्तिक छूत या विद्युत् के सदृश्य कोई सत्ता हो भी तो इसका माध्यम कोई भौतिक वस्तु ही हो सकती है, क्योंकि इसकी उद्भावना किसी व्यक्तित्व-सम्पन्न प्राणियों पर ही प्रधानतः निर्भर करती है।

(३) यह शुभ अथवा अशुभ सभी प्रकार के कार्यों में रत रहता है; अर्थात् इसका प्रयोग मित्रों को लाभ पहुँचाने और शत्रुओं को क्षति पहुँचाने में भी किया जा सकता है और यह धर्म की सेवा निर्विकल्प भाव से करता है। यह तो माना की प्रकृति के विषय में आरोपित किया गया, जिसके सम्बन्ध में यह ध्यान देना है कि यह न संज्ञा है न विशेषण, न क्रिया, क्योंकि यह एक ही साथ सत्ता, गुण और अवस्था तीनों ही है।

माना के स्वरूप की व्याख्या करते हुये प्रो० ब्राइटमैन ने कहा है कि यह शक्ति अथवा गति का पर्याय है जिसके आधार पर अद्भुत फलों को प्राप्त किया जाता है।[१]

यह असाधारण शक्ति विभिन्न वस्तुओं में स्थापित की जा सकती है। प्राचीन काल के लोगों की यह धारणा थी कि राजा यदि माना से युक्त तावीज पहनकर युद्ध में भाग लेगा तो उसे विजय अवश्य प्राप्त होगी। यदि कोई राजा माना से युक्त तावीज पहनकर युद्ध में भाग लेता था और विजयी होता था तो विजय का श्रेय सैन्य-शक्ति की सतर्कता एवं अध्यवसाय को न दे कर माना को दिया जाता था। पक्षी जो माना से युक्त समझी जाती थी उसमें फल-फूल देने की अद्भुत शक्ति थी। वह पक्षी जिस वृक्ष पर बैठ जाती थी वह वृक्ष फूल एवं फल से पूर्ण हो जाता था।

यदि किसी व्यक्ति की फुलवारी में फल-फूल प्रचुर मात्रा में विकसित होते थे तब उसका श्रेय व्यक्ति के श्रम एवं सतर्कता को न देकर फुलवारी में माना का समावेश कहा जाता था। माना का प्रकाशन अद्भुत पत्थर के द्वारा भी माना जाता था। माना से युक्त पत्थर का फुलवारी में रहना शुभ एवं उत्साहवर्द्धक माना जाता था। आदिम मनुष्य की धारणा थी कि पौधे वपन करने के बाद विकसित होते हैं परन्तु पौधे अपने पूर्णतः विकास के लिये माना के प्रभाव की अपेक्षा रखते हैं। आदिम मनुष्यों के बीच यदि किसी व्यक्ति के सूअर की संख्या निरन्तर बढ़ती जाती थी तब उसका कारण सूअर को माना के सम्पर्क में आना कहा जाता था। आदिम मनुष्य की धारणा थी कि माना के प्रभाव के बिना डोंगी की चाल में प्रगति नहीं आ सकती है तथा मनुष्य मछलियों को प्रचुर मात्रा में पकड़ने में सक्षम नहीं हो सकता है। अतः माना से विभिन्न प्रकार के आनन्द प्राप्त होते थे।

उपर्युक्त विवेचन से प्रमाणित हो जाता है कि माना का प्रयोग चमत्कारों के विधान,

व्याधिमुक्त करने के गुण, शकुन आदि की मीमांसा के लिए किए जाते थे। मानावाद में अन्धविश्वास की प्रधानता है।

चूँकि आदिम धर्म में माना की विद्युत् के सदृश्य एक शक्ति मान लिया गया है, अतः एक वस्तु से दूसरी वस्तु में इसका संक्रमण हो सकता है। इस प्रकार माना को गतिशील माना गया है।

माना का आधार वस्तु तथा मनुष्य माना जाता था। मनुष्य में कुछेक ऐसे व्यक्ति थे जो मानायुक्त समझे जाते थे। माना से युक्त व्यक्ति विशिष्ट व्यक्ति समझा जाता था तथा वह आराधना का पात्र माना जाता था। ऐसे व्यक्तियों में मुख्यतः पादरी, चिकित्सक तथा राजा आते थे। माना से युक्त व्यक्ति शुभ एवं अशुभ व्यापारों से सक्रिय माना जाता था। 'माना' की धारणा का प्रचलन जीववाद के पूर्व माना जाता है। 'माना' की धारणा में अति प्राकृतिक शक्ति के प्रति भय, रहस्य एवं आश्चर्य की भावना सन्निहित रहती है। 'मानावाद' जीववाद की अपेक्षा प्राचीन है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि मानावाद पूर्व-जीववादी (Pre-animism) धर्म का उदाहरण है। डॉ० मैरेट (Maret) का मत है कि माना की धारणा ही आगे चलकर जीववाद सिद्धांत को जन्म देने में सक्षम सिद्ध हो सकी है। इस विचार को मान लेने से टायलर महोदय का विचार कि धर्म की उत्पत्ति जीववादी विचार से हुई है, स्वतः खंडित हो जाता है। जब धर्म का इतिहास पूर्व-जीववादी सिद्धांत को मानता है तो वैसी स्थिति में जीववाद को धर्म की उत्पत्ति का श्रेय देना अमान्य जँचता है।

मानववाद में ऐसी शक्ति की उपासना होती है जो अनिश्चित तथा व्यक्तित्व रहित है परन्तु जीववाद में ऐसी शक्ति की आराधना होती है जो अपेक्षाकृत निश्चित तथा व्यक्तित्वपूर्ण है। व्यक्तित्व के आरोपण की स्थिति को व्यक्तित्वरहित की स्थिति से अधिक विकसित माना जाता है। अतः मानावाद, जीववाद की अपेक्षा अधिक आदिम है। फिर जीववाद में आत्मा और शरीर के बीच अन्तर दीखता है परन्तु मानावाद में आत्मा और शरीर के बीच अन्तर नहीं दीखता है। इसे सिद्ध होता है कि मानावाद, जीववाद की अपेक्षा प्रारम्भिक है।

जीववाद स्थायी संगठन के विकास का प्रतीक है। मानावाद, इसके विपरीत अस्थिर स्थिति का परिचायक है। चूंकि अस्थिर दशा को स्थायी दशा की तुलना में प्रारम्भिक माना जाता है इसलिये मानावाद को भी जीववाद से अधिक प्राचीन मानना चाहिए।

आदिम धर्म के दो पहलू हैं—भावात्मक तथा निषेधात्मक। 'माना' आदिम धर्म का भावात्मक पहलू है तथा निषेधात्मक पहलू टैबू (Taboo) के नाम से विख्यात है। "टैबू" शब्द अत्यन्त ही व्यापक है।

'माना' अद्भुत तथा अलौकिक शक्ति थी जिसे काम में लाने के लिए सतर्कता का पालन करना पड़ता था। 'माना' को सतर्कता से पालन करने के लिए कुछ प्रतिरोध लगाये गये थे। 'टैबू' उस निषेध का ही सूचक है। 'टैबू' के निषेधात्मक कार्य मुख्यतः निम्नलिखित हैं। इस निषेध के द्वारा मानव को अनेक वस्तुओं से अलग रहने की सलाह दी गई है। ये वस्तुएँ अछूत के विषय हैं। उन वस्तुओं में नवजात शिशु, नवमाता एवं मृतक शरीर मुख्य थे। नवजात शिशु तथा नवमाता को 'टैबू' माना जाता है तथा उन्हें सूतिका गृह में रखा जाता है। इस घर में प्रवेश करनेवाला व्यक्ति शिशु एवं माता की तरह अछूत माना जाता है। 'शव' को अछूत माना जाता है तथा इसे स्पर्श करने वाला व्यक्ति भी अछूत माना जाता है। यही कारण है कि शव की अन्तिम क्रिया करने वाले को शुद्धि कर्म के पश्चात् ही समाज में दाखिल होने की अनुमति दी जाती है।

प्रतिरोध (टैबू) का दूसरा निषेधात्मक कार्य उन पशुओं की हत्या करने से रोकना था जो आदर एवं आराधना के विषय थे। टोटम (Totem) पशु की हत्या करना निषेध था। 'टैबू' के द्वारा तीसरा प्रतिरोध यह था कि एक 'टोटम' सम्प्रदाय का व्यक्ति उसी वर्ग के दूसरे व्यक्ति के साथ शादी नहीं कर सकता था। एक सम्प्रदाय के व्यक्तियों के बीच शादी-संबंध का निषेध था।

यद्यपि "टैबू" का निषेधात्मक कार्य ही मुख्य था, फिर भी 'टैबू' के कुछ भावात्मक कार्य (positive functions) थे।

सर्वप्रथम, 'टैबू' के द्वारा कमजोर बच्चों तथा अबला स्त्री की रक्षा होती थी। असहायों की देखभाल करना 'टैबू' का प्रथम उद्देश्य था।

फिर शादी, विवाह, जन्म, मरण इत्यादि के नियमों का संचालन 'टैबू' के द्वारा ही सम्भव होता था। इसके अतिरिक्त 'टैबू' के द्वारा पुजारी एवं जादूगर की रक्षा होती थी। पुजारी एवं जादूगर का जीवन मूल्यवान समझा जाता था।

'टैबू' का अन्तिम कार्य खोई हुई वस्तु का पता लगाना था। यदि किसी व्यक्ति की सम्पत्ति खो जाती थी तो उस सम्पत्ति का पता लगाना 'टैबू' का उद्देश्य था। 'टैबू' के द्वारा कुछ ऐसे नियम बनाये गये थे जिनसे भूली हुई वस्तु साधारणतः प्राप्त हो जाती थी।